Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 3 | ISSUE : 12 | DEC 2017

बिहार के कैमूर पठार में सेवा केन्द्रों का स्थानिक वितरण : एक भौगोलिक अध्ययन

प्रो॰ संजय राज [1] |प्रो॰ विद्या शंकर [2]

[1] सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, जगदेव मेमोरियल महाविद्यालय, सकरी, कुदरा, कैमुर.

[2] सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, बाबा गणी नाथ महाविद्यालय, जमुहार, रोहतास, बिहार.

ABSTRACT

Keywords:

परिचय

प्रादेशिक नियोजन में स्थानिक संरचना के विभिन्न प्रतिरूपों में केन्द्रस्थल सिद्धान्त सर्वाधिक प्रसिद्ध है। अधिवासों की ऐसी अवस्थिति जो अपने चारों ओर के पृश्ठ **प्रदेश** से अन्तप्रक्रिया स्थापित कर वस्तुएं तथा सेवाएं प्रदान करते हैं उसे केन्द्रीय स्थल के रूप में माना जाता है। केन्द्रीय स्थानों की अवस्थितियों, आकारों, दूरियों तथा सेवाओं के आधार पर उनके विभिन्न वर्गो में पारस्परिक सम्बन्ध होता है। साथ ही सेवा प्रदान करने वाले अधिवासों का एक पदानुक्रम पाया जाता है।

केन्द्रस्थल सिद्धान्त के प्रतिपादकों में **अधिकांश अर्थशास्त्री** एवं भूगोलवेत्ता रहे हैं जिनमें क्रिस्ट्रालर, **लॉश**, बेवर, इसार्ड इत्यादि के नाम **विशेष** उल्लेखनीय हैं। क्रिस्टॅालर का केन्द्रस्थल सिद्धान्त यह बतलाता है कि केन्द्रीय स्थानों अर्थात् सेवा प्रदान करने वाले अधिवासों का एक पदानुक्रम होता है। इस सिद्धान्त के अनसार सेवा प्रदान करने वाले अधिवासों का प्रत्येक वर्ग अपने से निम्न क्रम के स्थानों द्वारा किये गये सभी सेवाओं को करता है तथा उनके साथ–साथ उन सभी सेवाओं को प्रदान करता है, जिनके आधार पर उसको निम्न क्रम के स्थानों में उच्च पद प्राप्त होता है। **लॉश** महोदय न अपने सैद्धान्तिक नियोजन में **षट्कोणीय** ढांचे का उल्लेख करते हुए कहा है कि पदानुक्रम की सामान्य संकल्पना के आधार पर पूर्ण आर्थिक **दृश्यभूमि** कैसे निर्मित हो सकती है। **लॉश** ने क्रिस्ट्रालर के सिद्धान्त के **विशेष** तथ्यों को सम्मिलित करते हुए आर्थिक दृश्यभूमि के रूप को विकसित किया, जिसमें प्रत्येक स्तर पर कई केन्द्रीय स्थान एवं उनके द्वारा संपादित कार्य होते हैं इसका अर्थ यह है कि समान जनसंख्या वाले अधिवासों में यह **आवश्यक** नहीं हैं कि उनके द्वारा समान सेवा सम्पादित हो। **लॉश** की परिकल्पना वास्तविकता के काफी नजदीक है।

उद्देश्य

वर्त्तमान समय में सेवा केन्द्र क्षेत्रीय विकास का आधार है, किसी क्षेत्र **विशेष** में अधिवास के नियोजन तथा आर्थिक एवं समाजिक विकास में सेवा केन्दों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए क्षेत्रिय विकास में इनका महत्व बढता जा रहा है। ये सेवा केंन्द्र मुख्य रूप से क्षेत्रिय हाट बाजार एवं लघु कस्बों के रूप में पाये जाते है। यह क्षेत्र अपनी सुविधानुसार वस्तुओं का क्रय–विक्रय करते हैं। व्यापार एवं वाणिज्य किसी भी सेवा केन्द्र के मूलभूत एवं केन्द्रीय कार्य है, जैसे–परिवहन, **प्रशासन**, **शिक्षा**, चिकित्सा, दूरसंचार, मनोरंजन, धार्मिक, सांस्कृतिक इत्यादि। क्षेत्रिय विकास की प्रक्रिया में इन सेवा केन्द्रों की भूमिका के महत्व को आंकते हुए नियोजन कर्त्ताओं ने विविध स्तर के सेवा केन्द्रों को विकसित करना प्रारंभ कर दिया है, जिससे क्षेत्रिय विकास को **गतिशीलता** प्रदान किया जा सके।

विधितन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन में अनुभवात्मक, अवलोकनात्मक एवं **विश्लेषणात्मक** विधितंत्रों का प्रयोग करते हुए पूर्ववर्ती विद्वानों द्वारा प्रस्तुत अध्ययनों के समीक्षोपरान्त अध्ययन के लिए व्यावहारिक विधियों का प्रयोग कर ग्रामीण विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका का परीक्षण किया गया है। बिहार के कैमूर पठार के सामाजिक –आर्थिक विकास को त्वरित गति प्रदान करने के **उद्देश्य** से क्रियान्वित विविध कार्यक्रमों तथा **प्रयाशों** में कई समस्याएँ स्वभावतः उत्पन्न हुई है। इन समस्याओं के सामाधान हेतु क्षेत्रीय विकास के लिए सेवाकेन्द्रों की भूमिका को **विश्लेषन** करने के लिए प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। विगत दो **दशकों** से भौगोलिक अध्ययन की प्रवृति एवं विधितंत्र में गुणात्मक एवं मत्रात्मक **विश्लेषण** समाहित हुए है। अतः नवीन प्रविधि के अनुसार सांख्यिकी में हुए परिवर्तन द्वारा मानचित्रण तकनीकी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। क्षेत्रीय नियोजन के निरूपण तथा समस्याओं के उपयुक्त सामाधान के लिए अनुभवात्मक, अवलोकनात्मक एवं **विश्लेषणात्मक** विधितंत्रों का प्रयोग किया गया है।

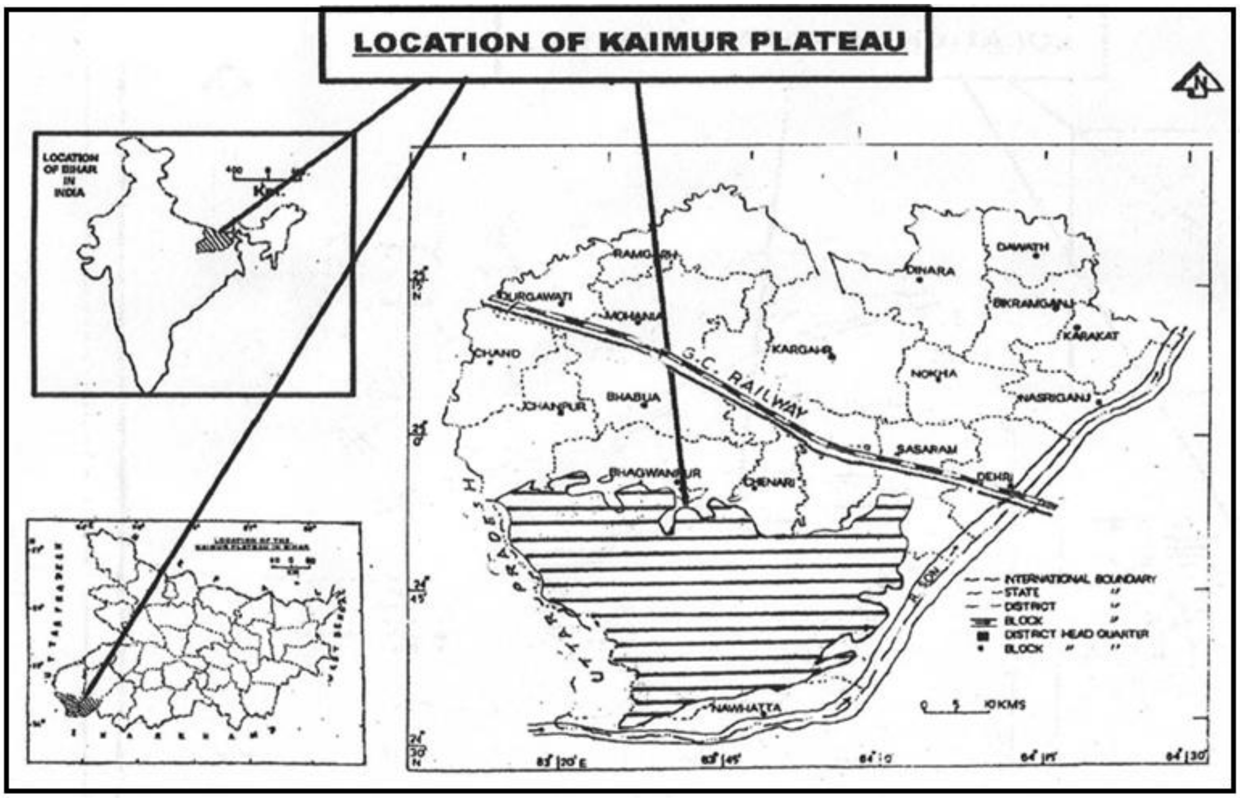

चित्र 1

अध्यन क्षेत्र :

विध्यांचल पर्वत माला की पूर्वी भाखा एवं बिहार में कैमूर श्रेणी के नाम स प्रसिद्ध यह पठारी भाग दक्षिण तथा पूर्व में सोन नदी द्वारा सीमांकित है जो कैमूर एवं रोहतास जिलों में स्थित है। लगभग 1,200 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल वाला यह **प्रदेश** शैल, बालु पत्थर, चूना पत्थर से निर्मित हैं जिसकी ऊचाँई 300 मीटर से 400 मीटर तक है। पठार की समान्य ढाल उत्तर तथा पूर्व की ओर है। पठार अपने निकटवर्ती मैदान से खड़े कगारों द्वारा अलग है। पठार से निकलकर प्रवाहित होने वाली नदियों के कटाव के कारण कगार के निकट कई घाटों का निर्माण हुआ है। जिससे होकर सड़क मार्ग पठार के भीतरी क्षेत्र की तरफ बनाये गये है। इस क्षेत्र का **अक्षांशीय** विस्तार 24^0 5' 30" उत्तर से लेकर $25^0$5' 5" उत्तर के बीच स्थित लगभग 1,200 वर्गी कि0 मी0 क्षेत्र में फैलाव हुआ है। पूरा का पूरा क्षेत्र पठारी एवं जंगली होने के कारण इस क्षेत्र का आर्थिक विकास नहीं हो पाया है। यह क्षेत्र कृशि के लिए अनुकूल नहीं है, इसलिए इसका आर्थिक, समाजिक तथा सांस्कृतिक विकास नहीं हो पाया है। क्योंकी इस **प्रदेश** में सेवा केन्द्रों का विकास भी सीमीत संख्या में हो पाया है जिसके कारण व्यापारिक, भौक्षणिक, स्वास्थ्य, परिहवन एवं संचार सेवाओं का अभाव पाया जाता है। अतः इस **प्रदेश** में नये सेवा केन्द्रो की संभावना से लेकर क्षेत्रिय विकास में उनकी भूमिका को **सुनिश्चित** करना ही इस भोध प्रबन्ध का प्रमख **उद्देश्य** होगा।

सेवा केन्द्रों का अभिज्ञान

सेवाकेन्द्रों के निर्धारण में **प्रशासनिक** आंकड़ों के अभाव में प्रत्येक अधिवास का व्यक्तिगत सर्वेक्षण करके आंकड़े संगहीत किये गये हैं। एतदर्थ अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान कार्यो की एक सूची तैयार की गयी है जिसमें कुल 48 समाजाजिक कार्य हैं। विभिन्न जानकारियां विकासखण्ड कार्यालय से तथा ग्राम्य विकास अधिकारियों से प्राप्त की गयी हैं। अब तक केन्द्रीयता के मापन की कोई उपयुक्त विधि विकसित नहीं हो सकी है। अतएव सेवाओं के मूल्यांकन में भारांक विधि का सहारा लिया जाता है। **दुर्भाग्यवश** अब तक कोई सटीक सांख्यिकीय विधि विकसित नहीं हो पायी है जिससे कार्यों को उचित भारांक प्रदान किया जा सके। कुछ भोधकर्ताओं ने मूल्य निर्णय तथा कुछ ने जनसंख्या की न्यूनतमांक सीमा के आधार पर कार्यो को अंक मान प्रदान किया है। यहां प्रत्येक कार्य का भारांक देने के लिए निम्नांकित सूत्र का आश्रय लिया गया है। जिसमें भा – किसी कार्य **विशेष** का भारांक , अ– अध्ययन क्षेत्र में अधिवासों की कुल संख्या जिनमें कार्य **विशेष** विद्यमान है। कार्यो के भारांक का निर्धारण करते समय जो स्थान इण्टर एवं हाईस्कूल दोनों को देते हैं वहां केवल इण्टर कालेज को ही भारांक दिया गया है तथा यदि किसी स्थान पर एकाधिक कार्य हो तो कार्यो की संख्या के अनुसार भारांक दिये गये हैं।

क्षेत्रीय विकास के संदर्भ में सेवा केन्द्रों की संकल्पना को एक आधारभूत अवधारण माना जाता है। किसी **प्रदेश** की अधिवासीय पृश्ठभूमि में ऐसी अवस्थिति, जो अपने चारो ओर के समीपवर्ती क्षेत्रों को वस्तुएं तथा सेवाएं प्रदान करती है, उसे सेवा केन्द्रों के रूप में माना जाता है। 'सेवा केन्द्र' केन्द्र स्थल के लिए प्रयुक्त पर्यायवाची भाब्दों में सर्वाधिक प्रसिद्ध है। बाजार केन्द्र का प्रयाग भी सेवा केन्द्र के अर्थ में ही होता है क्योंकि प्रत्येक सेवा केन्द्र के लिए बाजार का कार्य करना अनिवार्य है। वास्तव में सेवा केन्द्र द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले प्रकार्य एवं समीपवर्ती क्षेत्र को प्रदान की जाने वाली सेवाएं ही इनके निर्धारण का आधार होती है। वाणिज्य एवं व्यापार सेवा केन्द्रों के सर्वव्यापी कार्य होते हैं तथा जनसंख्या एवं उसकी संरचना उनके सापेक्षिक महत्व को **प्रदर्शीत** करती है।

प्रस्तुत अध्ययन में सेवा केन्द्रों का अभिज्ञान सेवाओं की समुपस्थिति एवं अन्योन्याश्रितता के आधर पर किया गया है। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि अध्ययन क्षेत्र में सेवाओं की मात्रा (संख्या) कितनी है यह ध्यान में नहीं रखा गया है। बल्कि ऐसे अधिवास जहां सेवा **विशेष** उपलब्ध है अध्ययन क्षेत्र में ऐसे सेवायुक्त अधिवासों की संख्या कितनी है? यह ध्यान में रखा गया है। भोधकर्ता ने कैमूर पठार में सेवाओं का पदानुक्रम निर्धारित करने के लिए कुल 1126 आबाद अधिवासों तथा 34 प्रकार के सेवाओं का **समावेश** किया गया है जो निम्नलिखीत भार्तो को पुरा करता है।

1. अधिवास की जनसंख्या कम से कम 3000 हो।
2. सभी सेवा–समूह की सेवा–सुविधा यदि नहीं भी हो, परन्तु वाणिज्यिक तथा बैकिग सुविधाओं के साथ कम से कम पांच सेवा–समूहों की एक–एक सेवा अनिवार्य है, किन्तु उच्चकोटि की एक सेवा **अवश्य** हो। चूंकि सेवा केन्द्रों में वाणिज्यिक तथा बैकिंग कार्यो के सम्पादन को काफी महत्व दिया जाता है, अतः इन तत्वों को सेवा केन्द्रों के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उललेखनीय है कि जहां ये सुविधाएं उपलब्ध होती हैं, वहां परिवहन सुविधाएं मिलती है।
3. ऐसे अधिवासों को भी सेवा केन्द्र माना गया है, जहां मध्यम कोटि की कम से कम दो सेवा–सुविधा या उच्चकोटि की एक सेवा के साथ पांच सेवा समूह की एक–एक सेवा उपलब्ध हो। किन्तु वहां पक्की सड़क अथवा बस स्टैण्ड **अवश्य** हो।

सेवा केन्द्रों के निर्धारण मे पक्की सड़क तथा बस स्टैण्ड को इसलिए महत्वपूर्ण तत्व माना गया है, क्योंकि अनुपलब्ध सेवाओं के लिए भाासकीय वाहन या निजी वाहन से अन्य केन्द्रों में जाया जा सके।

उपर्युक्त निर्धारक तत्वों के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित 1126 अधिवासों में से 57 अधिवासों को सेवा केन्द्रों के रूप में चुना गया है।

सेवाकेन्द्रों का निर्धारण

सेवाकेन्द्रों के पदानुक्रम निर्धारित करने के पूर्व सेवाकेन्द्रों का निर्धारण **आवश्यक** है। इस विशय पर **विदेशी** भूगोलवेताओं में क्रिस्ट्रालर लॉश, ब्रेसी, बेरी व गरीसन, तथा गॉडलैण्ड के विचार काफी महत्वपूर्ण है। इन्होंने सेवा केन्द्रों को विभिन्न पदानुक्रम में वर्गीकृत करके उनके सेवा **प्रदेश** के संबंध में **निश्चित** सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं। इसी संबंध में भारतीय विद्वानों में सेन, वनमाली, सिंह, नित्यानंदर, खान कुमार एवं भार्मा के नाम **विशेष** उल्लेखनीय हैं। कैमूर पठार में सम्मिलित अधिवासों का पदानुक्रम असम्भव तथा अव्यावहारिक होगा क्योंकि कुछ वृहद आकार के ग्रामों में भी उच्चकोटि की सेवाएं पाई जाती है। जबकि कम जनसंख्या वाले अधिवासों में भी उच्चकोटि की कुछ सेवाएं उपलब्ध ह। अध्ययन क्षेत्र में ऐसे भी ग्राम हैं, जहां कोई सुविधाएं ही नहीं है।

तालिका संख्या 1

क्र0	सेवाओं का नाम	कुल अधिवास जहां सेवा उपलब्ध है	कार्यिक भार	तुलनात्मक भार
1	विृद्युत	182	3.22	1
2	माध्यमिक विद्यालय	315	4.51	1.4
3	पक्की सड़क	22	4.91	1.52
4	ग्राम पंचायत	190	5.98	1.86
5	सप्ताहिक बाजार	133	6.52	2.02
6	प्रा0 स्वा0 केन्द्र एवं उपकेन्द्र	150	6.76	2.1
7	ग्राम सेवक	150	7.71	2.39
8	डाकघर	80	8.27	2.57
9	बस स्टैण्ड	50	11.33	3.52
10	उ0मा0 विद्यालय	120	13.57	4.21
11	सहकारी समिति	30	13.89	4.31
12	खाद वितरक केन्द्र	35	13.89	4.31
13	पशु चिकित्सालय	10	23.18	7.19
14	आयुर्वेदिक औषधालय	30	26.62	8.27
15	सार्वजनिक दूरभाष केन्द्र	136	30.34	9.42
16	ग्रामीण बैंक	11	36.84	11.44
17	व्यावसायिक बैंक	15	47.98	14.9
18	पुलिस थाना	15	62.71	19.47
19	सहकारी बैंक	8	77.85	24.18
20	स्नातक महाविद्यालय	15	137.53	42.71
21	परिवार नियाजन केन्द्र	15	152.81	152.81
22	विकासखण्ड मुख्यालय	8	171.92	53.39
23	सहकारी विपणन एवं प्रक्रिया समिति	5	179.39	55.71
24	तार घर	8	179.39	55.71
25	तहसील मुख्यालय	8	217.16	67.44
26	रेलवे स्टेशन	0	0	0
27	एपोपैथिक चिकित्सालय	8	229.22	71.19
28	भूमि विकास बैंक	8	343.83	106.78
29	कृषि उपज मंडी	4	375.09	116.49
30	होम्योपैथिक औषधालय	10	458.44	458.44

इसलिए कतिपय निर्धारक तत्वों के आधर पर सेवा केन्द्रों का निर्धारण न्याय संगत व यथार्थ होगा। विभिन्न भूगोलवेताओं के द्वारा अपनायी गई विधियों तथा सेवा केन्द्रों की आधारभूत **विषेशताओं** को ध्यान में **रखकर षोधकर्ता** ने निम्नलिखित निर्धारक तत्वों के आधार पर सेवाकेन्द्रों का निर्धारण किया है।

(1) सभी सेवा समूह की एक–एक सेवा – सुविधायुक्त अधिवासों को सेवाकेन्द्र तभी माना जा सकता है जब वहां उच्चतम कोटि की कम से कम दो सेवाएं उपस्थित हों।

सामान्यतया सभी सेवा–सुविधाओं से युक्त अधिवासों में उच्चतम कोटि की सेवाओं की संख्या अधिक होने के साथ–साथ वहां वाणिज्यिक एवं परिवहन सुविधाएं भी विद्यमान होती हैं।

(2) सभी सेवा–समूह की सेवा–सुविधा यदि नहीं भी हो, परन्तु वाणिज्यिक तथा बैंकिंग सुविधाओं के साथ कम से कम पांच सेवा–समुहों की एक–एक सेवा अनिवार्य है, किन्तु उच्च कोटि की एक सेवा अवश्य हो। चूंकि सेवा केन्द्रों में वाणिज्यिक तथा बैंकि कार्यो के सम्पादन को काफी महत्व दिया जाता है अतः इन तत्वों को सेवा केन्द्रों के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उल्लेखनीय है कि जहां से सुविधाएं उपलब्ध होती है, वहां परिवहन सुविधाए मिलती है।

(3) ऐसे अधिवासों को भी सेवा केन्द्र माना गया है जहां मध्यम कोटि की कम स कम दो सेवा–सुविधा या उच्चकोटि की एक सेवा के साथ पांच सेवा

समूह की एक एक सेवा उपलब्ध हो । किन्तु वहां पक्की सड़क अथवा बस स्टैण्ड अवश्य हो। सेवाकेन्द्रों के निर्धारण में पक्की सड़क तथा बस स्टैण्ड को इसलिए महत्वपूर्ण तत्व माना गया है, क्योंकि अनुपलब्ध सेवाओं के लिए भासकीय वाहन या निजी वाहन से अन्य केन्द्रों में जाया जा सके।

स्थानिक वितरण प्रतिरूप

अध्ययन क्षेत्र मे सेवाकेन्द्रों का वितरण **कमोवेश** समान है। किन्तु वहीं – कहीं यह प्रतिरूप भौतिक तत्वों के कारण यथा जल की सुविधा, उपवाह व्यवस्था, मिटटी निचेल धरातल तथा उपर भाग के कारण प्रभावित होते है तो कहीं सांस्कृतिक तत्वों के कारण यथा भूमि उपयोग भूमिस्वामित्व , यातायात एवं संचार के साधन आदि से प्रभावित होते हैं। सेवाकेन्द्रों का वितरण व्यवहारिक तथा अनेकानेक सामाजिक, आर्थिक तत्वों से भी पासित होते है। अध्ययन क्षेत्र में सेवाकेन्द्रों की स्थिति एवं विकास में सोन, कर्मनाशा, दुर्गावती, गुडुवत, कुदरा, सुगा तथा कॉव नदियों का स्पश्ट प्रभाव मिलता है। ये नदियां खराब अपवाह तथा जल प्रपात बनाने वाली होने के कारण कहीं कहीं प्राकृतिक **दृश्य** बनाती है। लेकिन आवागमन की सुविधा नहीं होने के कारण सेवाकेन्द्रों के वितरण में प्रतिकुल प्रभाव डालती है। प्रादेशिक नियोजन के संदर्भ में **विशेषतः** उपयोगी संरचना उपलब्ध कराने में सेवा केन्द्रों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। कैमूर पठार के **विशमतापूर्ण** प्राकृतिक **पृश्ठभूमि** म मानव द्वारा आर्थिक एवं सामाजिक क्रियाओं की दीर्घकालीन प्रक्रिया के फलस्वरूप अधिवासों के स्थानिक वितरण–प्रतिरूप में विविधता विकसित हो गई है। कैमूर पठार पर सेवा केंद्रों का वितरण सबसे ज्यादा (16) अधौरा अंचल में है जबकि सबसे कम (3) भगवानपुर तथा तिलौथू अंचल में है। यदि नौहट्टा की बात की जाए तो वहां पर भी 8 सेवा केंद्र हैं, रोहतास अंचल में सेवा केंद्रों की संख्या 9 है, सासाराम मैदानी भाग को छोड़ दिया जाए तो पठारी क्षेत्र में केवल 4 सेवा केंद्र मौजूद हैं उसी प्रकार शिवसागर में 4, चेनारी में 4, रामपुर में 5 तथा चैनपुर में 8 सेवा केंद्र मौजूद है जो तालिका संख्या 2 तथा चित्र संख्याा 2 में **प्रदर्शित** किया गया है।

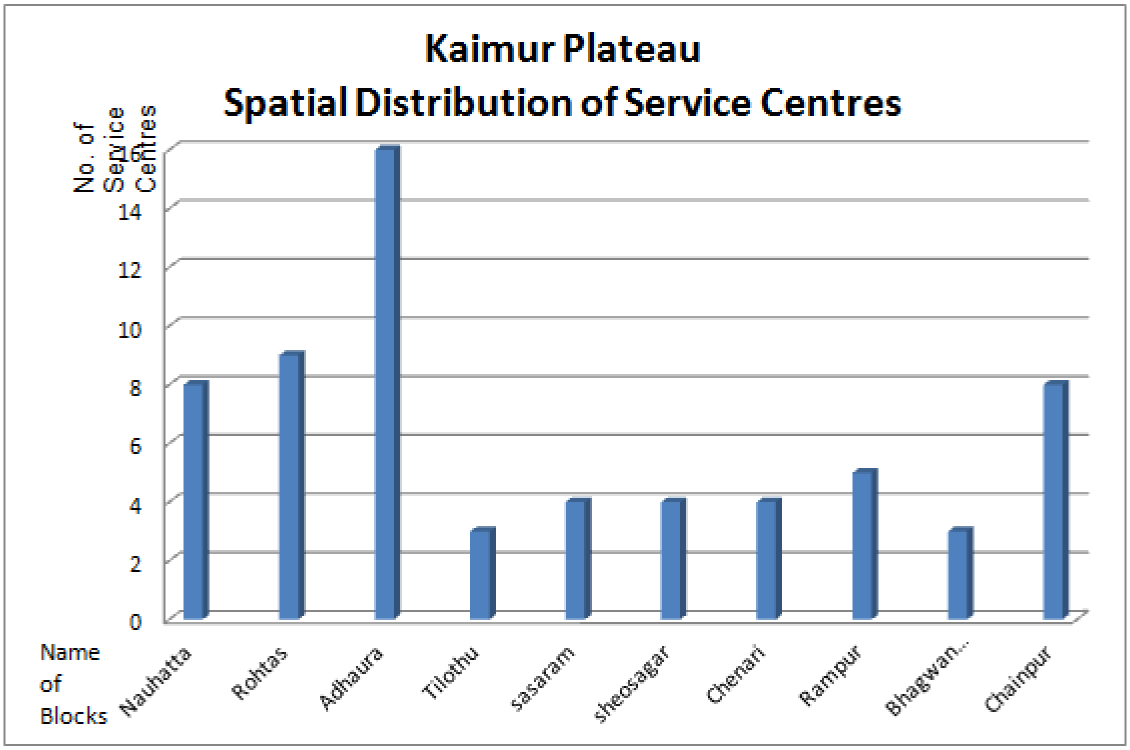

चित्र 2

तालिका संख्या 2																			
Kaimur Plateau																			
Spatial Distribution of Service Centres																			
	Nauhatta		**Rohtas**		**Adhaura**		**Tilothu**		**sasaram**		**Sheosagar**		**Chenari**		**Rampur**		**Bhagwanpur**		**Chainpur**
1	Rehal	1	Dhansa	1	Chaya	1	Goria	1	Malwa	1	Kirhiri	1	Malhipur	1	Sawar	1	Haripur	1	Patesar
2	Rohtasgarh	2	Akbarpur	2	Marap	2	Tilothu	2	Kupa	2	Sukuhin	2	Shergarh	2	Hunram	2	Bhagwanpur	2	Koindi
3	Jora	3	Tumba	3	Champura	3	Ramdihara	3	Karserua	3	Kusumha	3	Auraiya	3	Bhitarbandh	3	Hamran	3	Hata
4	Bandu	4	Rohtas	4	Londa			4	Kanchanpur	4	Chapri	4	Banda	4	Barwankhud			4	Chainpur
5	Karserua	5	Banjari	5	Kuluha									5	Rampur			5	Lohra
6	parchha	6	Baknar	6	Sikarwar													6	Kanhanar
7	tilokhar	7	Kasiawan	7	Salea													7	Mahihganwan
8	sahpur	8	Nawadih	8	Sarwandag													8	Kamharia
		9	telkap	9	Karar														
				10	Dunarkon														
				11	Kesaraurakalan														
				12	Urwasot														

				13	Dugha														
				14	Adhaura														
				15	jharia														
				16	jwar														

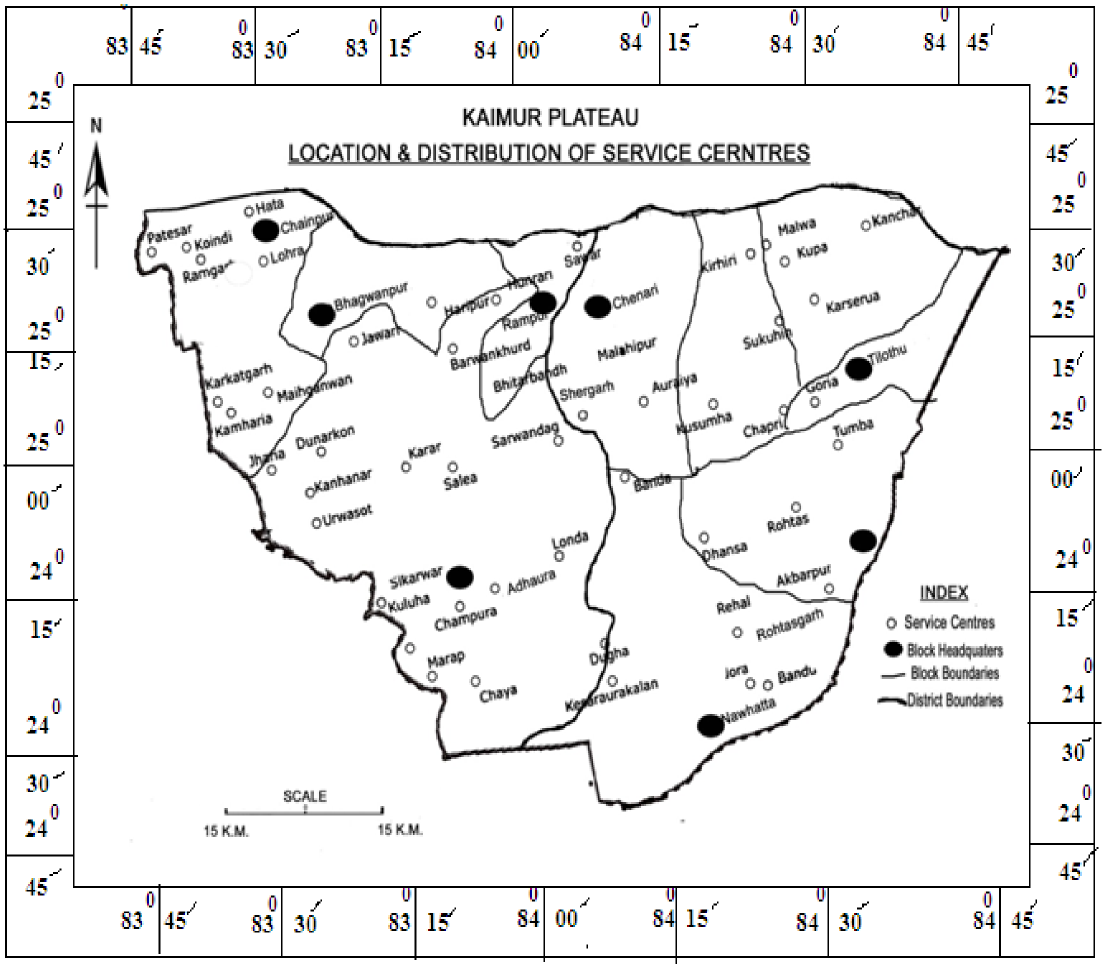

चित्र 3

निश्कर्श

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि कैमूर के पठारी क्षेत्र में सेवा केंद्रों की कुल संख्या 57 है जो विभिन्न अंचलों में वितरित है। इनका वितरण असामान्य है क्योंकि सेवा केंद्रों का अधिक होना दो बातों पर निर्भर करती है। पहली किसो अंचल का क्षेत्रीय विस्तार अधिक होना तथा दूसरी जनसंख्या का अधिक होना अर्थात जिस अंचल का क्षेत्रफल अधिक है वहां अधिक लोग निवास करते हैं। उस क्षेत्र का विकास अधिक हुआ है इसलिए सेवा केंद्रों की स्थिति किसी भी क्षेत्र के विकास का द्योतक है।

REFERENCES

1. वंसल, सु0 च0 – (2005) ग्रमीण बस्ती भूगोल, मीनाक्षी **प्रकाशन** मेरठ।

2. सिंह, **जगदीश** (1997) भूवैन्यासिक संगठन, एक मूलभूत, भौगोलिक संरचना, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका अंक 13।

3. तिवारी, आर0 सी0 (2003) अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन ।

4. कुमार, अनिल (1995) बिहार का भूगोल, **नेशनल** बुक ट्रस्ट इण्डिया।

5. श्रीवास्तव, भार्मा एवं चौहान (2005) **प्रादेशिक** नियोजन एवं संतुलित विकास, वसुन्धरा **प्रकाशन** गोरखपऱ।

6. सिंह, एम0 वी0 एवं के0 के0 दूबे (1999) **प्रादेशिक** विकास नियोजन, तारा बुक एजेन्सी वाराणसी।

7. भार्मा, **नन्देश्वर** (2008) बिहार की भौगोलिक समीक्षा, वसुन्धरा **प्रकाशन**, गोरखपुर।

8. अताउल्लाह, मो0 (2008) बिहार का आधुनिक भुगोल, ब्रिलियन्ट **प्रकाशन**, पटना।

9. पाठक, **गणेश** कुमार , (1993) : अध्ययन क्षेत्र बलिया (उ0प्र0) के सेवा केन्द्र एवं ग्रामीण विकास में उनका योगदान पी0एच0डी0 भोध प्रबन्ध, अवध **विश्वविद्यालय**, फैजाबाद।